नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन

भारत के महान सपूत नेताजी श्री सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन। उन्हें कोटि-कोटि वंदन।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस, भारत के पराक्रम और प्रेरणा के साक्षात प्रतीक हैं। अपने साहस और पराक्रम से नेताजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई शक्ति प्रदान की। उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में अपनी नेतृत्व शक्ति से देश की युवाशक्ति को संगठित किया।

आज आप जिस स्थान पर बैठे हैं, यह वही स्थान है, जहां नेताजी जैसे स्वतंत्रता सेनानियों के साहस और बलिदान ने देश को सदियों के बाद आजादी दिलाई थी। और यही वह स्थान है जहां उनके आदर्शों के अनुसार संविधान का निर्माण किया गया था।

नेताजी ने यह दिखाया कि जिस अंग्रेजी सत्ता का सूरज कभी अस्त नहीं होता है, भारत के वीर सपूत उसे भी परास्त कर सकते हैं। उनका 'जय हिन्द' का प्रेरणादायी नारा जो आज तक हमारे कानों में गूंजकर हृदय में देशप्रेम की लहरें पैदा करता है, वास्तव में राष्ट्रीय एकता की पहचान बन गया है।

उन्होंने संकल्प लिया था कि, भारत की जमीन पर आजाद भारत की आजाद सरकार की नींव रखेंगे। नेताजी ने यह वादा पूरा भी किया। उन्होंने अंडमान में सैनिकों के साथ आकर तिरंगा फहराया।

जिस जगह अंग्रेज स्वतंत्रता सेनानियों को यातनाएं देते थे, उस जगह जाकर उन्होंने उन सेनानियों को अपनी श्रद्धांजलि दी। वो सरकार अखंड भारत की पहली आजाद सरकार थी और नेताजी आजाद हिंद सरकार के पहले मुखिया।

नेताजी के नेतृत्व में आजाद हिंद सरकार ने हर क्षेत्र से जुड़ी योजनाएं बनाई थीं। इस सरकार का अपना बैंक, मुद्रा, डाक टिकट और अपना तंत्र था।

देश के बाहर रहकर सीमित संसाधनों के साथ शक्तिशाली साम्राज्य के खिलाफ इतना व्यापक तंत्र विकसित और सशक्त क्रांति करना, अभूतपूर्व और असाधारण कार्य था।

नेताजी का एक ही उद्देश्य और मिशन था भारत की आजादी। भारत को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना। नेताजी का एक ही उद्देश्य और मिशन था। उनकी एक ही विचारधारा थी और यही उनका कर्मक्षेत्र था।

जो देश उस समय अपनी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे, उन्हें नेताजी सुभाषचंद्र बोस को देख कर प्रेरणा मिलती थी। उन्हें लगता था कि कुछ भी असंभव नहीं है। हम भी संगठित हो सकते हैं, अंग्रेजों को ललकार सकते हैं, आजाद हो सकते हैं।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति और भारत रत्न नेल्सन मंडेला ने कहा था कि दक्षिण अफ्रीका के छात्र आंदोलन के दौरान वो भी नेताजी को अपना नेता और हीरो मानते थे।

देश की स्वाधीनता के लिए ऐसा जुनून उनके मन में था कि वे भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को देश की सीमाओं से बाहर ले गए, जोकि हमारे स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में संभवतः एक विलक्षण कार्य था।

नेताजी यह देख रहे थे कि विश्व युद्ध के माहौल में अंग्रेजी हुकूमत को अगर बाहर से चोट पहुंचाई जाए तो भारत आजादी की तरफ तेजी से आगे बढ़ेगा।

वो भविष्य देख रहे थे कि जैसे-जैसे विश्व युद्ध बढ़ेगा, वैसे-वैसे अंग्रेजों की ताकत कम पड़ती जाएगी। भारत पर उनकी पकड़ कम पड़ती जाएगी। यह उनका विजन था।

वो देश से तुरंत बाहर निकलकर देश के बाहर भारत समर्थक शक्तियों को एकजुट करना चाहते थे। और इसीलिए नेताजी जर्मनी, जापान, सिंगापुर और यूरोप के कई देशों में गए, वहाँ भारत की आजादी का नेतृत्व किया।

नेताजी अपने कर्तव्य के लिए पूर्ण भाव से समर्पित थे। तन-मन – समर्पण से वह भारत के लिए थे। उन्होंने कभी देश से कुछ लिया नहीं, बल्कि देश को दिया ही।

महात्मा गाँधी जी ने उन्हें देशभक्तों का देशभक्त कहा था। देश के लिए पूरी तरह समर्पित उनका व्यक्तित्व था।

नेताजी कहा करते थे, 'भारत विश्व प्रासाद (महल) की नींव का पत्थर है। हमारी धरती, हमारी सभ्यता एवं संस्कृति अति महान और प्राचीन है। यह हमारी जन्मभूमि है, जिसकी धूल में राम और कृष्ण घुटनों के बल चले थे। यदि हमें अपनी स्वर्ग समान मातृभूमि के लिए कष्ट सहने पड़ते हैं तो क्या यह प्रसन्नता का विषय नहीं है।'

अपने ओजस्वी विचारों और क्रांतिकारी नारों के माध्यम से उन्होंने भारत के राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया।

उन्होंने संपूर्ण क्रांति के माध्यम से देश के युवाओं को एक नई आवाज देते हुए आधुनिक भारत के निर्माण में बढ़-चढ़ कर योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

आज के आधुनिक भारत को, विकास के सपनों को लेकर सिद्धि के मार्ग पर बढ़ते भारत को सुभाषचंद्र बोस जैसे महापुरुषों की सबसे अधिक जरूरत है।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत की सामूहिक चेतना के प्रतीक हैं। जिस कालखंड में भारत का आम जनमानस विदेश शासन से जूझ रहा था, नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने तब देश की जनता को साहस और देशभक्ति से भर दिया था।

नेताजी का जीवन यह दर्शाता है कि हम चुनौतियों के सामने घुटने नहीं टेक सकते, हार नहीं मान सकते। हमें चुनौतियों का सामना करना होता है, उनसे लड़ना और जूझना होता है। एक प्रतिष्ठित नौकरी पाकर वे आराम से बैठकर अपना जीवन बिता सकते थे लेकिन उन्होने कठिन रास्ता चुना, जो देश और समाज के लिए कुछ कर गुजरने का था, अपने कर्तव्यों के लिए मर मिटने का था, बदलाव के लिए खुद को समर्पित करने का था।

अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देश और समाज के लिए क्या कुछ किया जा सकता है, नेताजी का जीवन हमें यह बतलाता है। नेताजी का मार्ग साहस का मार्ग था, संघर्ष के माध्यम से बदलाव लाने का मार्ग था।

वे मानते थे कि जन भागीदारी के माध्यम से बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं, और इसलिए अपने भाषणों और सम्मेलनों के माध्यम से वे जनता से जुड़े रहते थे।

नेताजी को यह दृढ़ विश्वास था कि देश की महिलाएं, हमारी बेटियाँ किसी से कम नहीं है। उन्होंने उस समय के पराधीन भारत में भी यह संदेश दिया। इसके लिए आजाद हिंद फौज में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम से महिला रेजीमेंट बनाकर महिलाओं को शामिल किया। ऐसी प्रगतिशील सोच थी उनकी।

दो वर्ष पहले नेताजी की 125वीं जयंती के अवसर पर इंडिया गेट पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने नेताजी की प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा था कि, नेताजी कुछ ठान लेते थे, तो फिर उन्हें कोई ताकत रोक नहीं सकती थी। हमें नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 'Can Do, Will Do' स्पिरिट से प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना है। आज इस केन्द्रीय कक्ष में उपस्थित नौजवानों से मेरा भी यही आह्वान है।

मातृभूमि के लिए नेताजी सुभाष चंद्र बोस का अद्वितीय त्याग, तप और संघर्ष सदैव देश का मार्गदर्शन करता रहेगा। नेताजी का जीवन सदा ही हम सबका मार्गदर्शन करता रहेगा।

इसी विश्वास के साथ मैं आप सभी से अपील करता हूँ कि आप यहाँ से जाएं, तो यह प्रण लेकर जाएं कि हम अपने इन राष्ट्र नायकों के जीवन से सीखकर अपने जीवन को बेहतर बनाएंगे। हम अपने साथ, अपने समाज और राष्ट्र के लिए चिंतन करेंगे।

अभी तीन दिन बाद भारत अपना 74वां गणतंत्र दिवस मनाने जा रहा है। मैं आप सभी को गणतंत्र दिवस की भी अग्रिम शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि आप नौजवानों का संकल्प भारत गणतंत्र को और अधिक समृद्ध बनाएगा। आपको बहुत बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद।

———